※ श्रीसर्वेश्वरो जयति ※

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीसर्वेश्वरशतकम्

रचयिता —

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

सर्वेश्वर अविराम भज

(१)

सर्वेश्वर अविराम भज, जीवन सार्थक जान ।
'राधासर्वेश्वरशरण' पावत प्रिय भगवान ।।

(२)

सर्वेश्वर सुखधाम है, वितरत नित रसदान ।
'राधासर्वेश्वरशरण' अनुपम कृपानिधान ।।

(३)

सनकादिकसेवित प्रभु, सर्वेश्वर प्रिय नाम ।
'राधासर्वेश्वरशरण' रट मन आठों याम ।।

(४)

सर्वेश्वर जय-जय करत, सकल दुरित नश जात ।
'राधासर्वेश्वरशरण' अविरल भज दिन-रात ।।

(५)

प्रतिपल सर्वेश्वर प्रभू, मञ्जुल अतिप्रिय रूप ।
'राधासर्वेश्वरशरण' दरशन रत सुर-भूप ।।
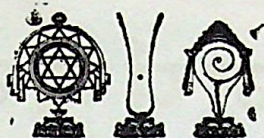
* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

द्वारा विरचित—

श्रीसर्वेश्वरशतकम्

प्रकाशक—

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

(सलेमाबाद) किशनगढ़, अजमेर

[राजस्थान]

श्रीनिम्बार्काब्द ५०९१

पुरुषोत्तममास

प्रथमावृत्ति	आषाढ शु० १५ सोमवार	न्यौछावर
१०००	वि० सं० २०५३	५) रुपया

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

-: समर्पणम् :-

उपासनीयं सनकादिवर्यै-

-राराधनीयं मुनिनारदाद्यैः ।

निम्बार्कहस्ताम्बुजसेव्यमानं

सर्वेश्वरं नौमि सदा वरेण्यम् ।।१।।

सर्वेश्वरीयं शतकं समग्रं

स्तवात्मकं भक्तिरसात्मकञ्च ।

त्वत्पादकञ्जे विधि-शम्भुसेव्ये

समर्पयेऽहं नितरां सनिष्ठम् ।।२।।

मितिः—माघ शुक्ल १० मंगलवार वि० सं० २०५२

दिनाङ्काः—३०/१/१९९६

श्रीसर्वेश्वरपदकञ्जभक्तिकामः—

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

श्रीसनकादिक संसेव्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु
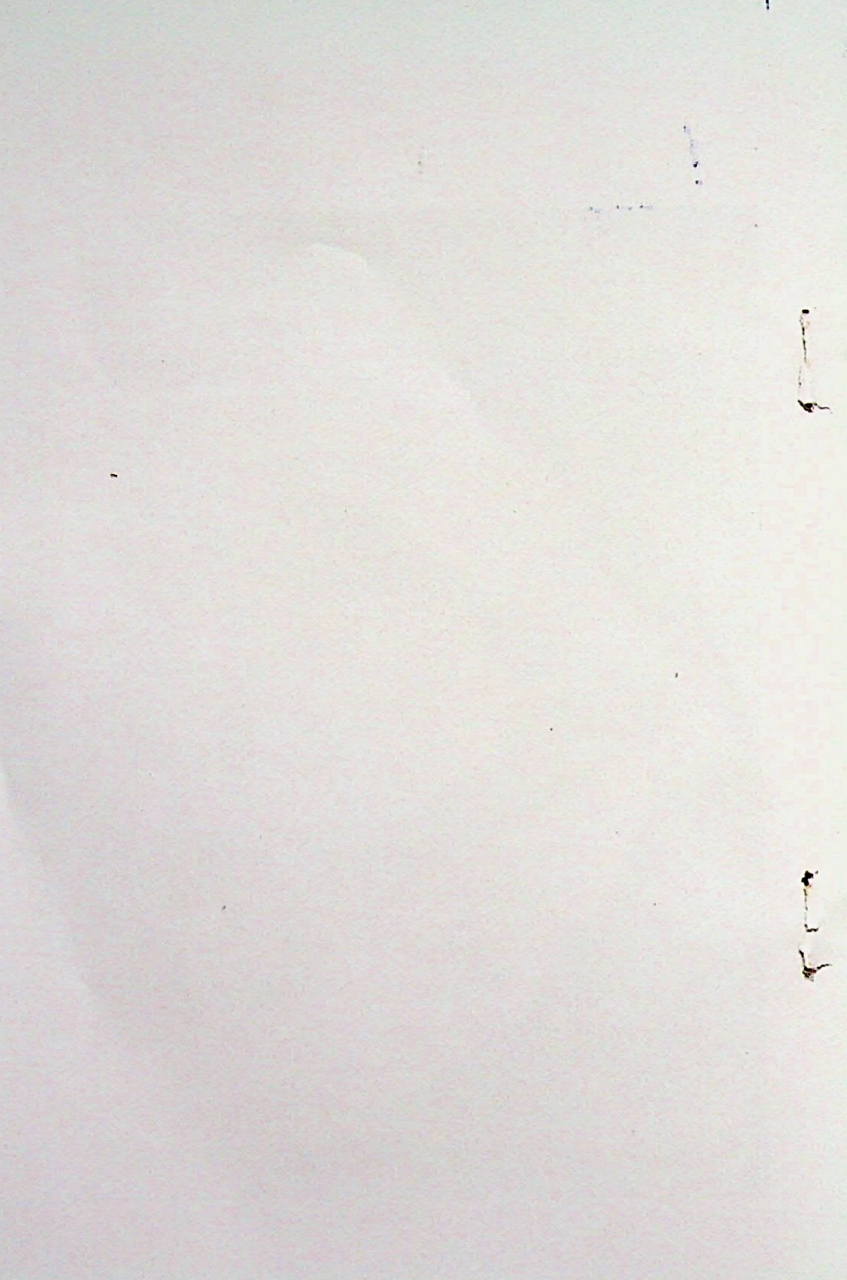
"श्रीसर्वेश्वरशतक" विषयक

विशिष्ट महानुभावों एवं विद्वज्ज्जनों के

भावोद्‌गार

विश्वविख्यात श्रीरामकथा प्रवक्ता मानसमयूर युगसन्त श्रीमुरारी बापू 'निम्बार्करत्न' महुआ (सौराष्ट्र) के पावन हृदयोद्‌गार

परम पूज्य जगद्‌गुरु 'श्रीजी' महाराजश्री शरीर से अस्वस्थ होते हुए भी भीतरी चेतना से जितने स्वस्थ हैं, उसका यह "श्रीसर्वेश्वरशतक" अकाट्य प्रमाण है।

जो स्वस्थ है वही समर्थ होता है। हमारे पूज्य श्रीचरणों की इस महिमा का हमें गौरव है। सभी को यह स्तोत्र भवरोग की भी औषध सिद्ध होगी ऐसा विश्वास है।

अनन्त प्रणाम के साथ

पूज्य श्रीचरणों के समीप बैठकर
दादर– बम्बई

मुरारी बापू
१२/२/९६

अनन्त श्रीसमलकृत रामानुजाचार्य स्वामी श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज डीडवाना (राज०) के पावन–विचार

श्रीमदनन्तश्रीविभूषित श्रीमज्जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज श्री 'श्रीजी' विरचित 'श्रीसर्वेश्वरशतक स्तोत्र' श्रीराधा-कृष्ण प्रभु की समस्त लीला प्रत्यक्ष प्रकट करते हुए भक्तजनानन्द-संवर्धक माधुर्यादि गुण युक्त रसायन सदृश मुझे अनुभव में आया। पढ़कर प्रसन्नता हुई। अनुभव करने पर अपारसौन्दर्यनिधान श्रीराधामाधव के अनेकविध दृश्य प्रकट होने लगे।

पूज्य परमादरणीय योगीराज श्री 'श्रीजी' महाराज की भावसमाधि अवस्था की यह रचना सभी का कल्याण सम्पादन समर्था है। इस रचना को अस्वस्थावस्था में श्री 'श्रीजी' प्रकट कर रहे हैं। सहज समाधि अवस्था आपकी इससे सिद्ध हो रही है।

स्वामी श्रीनिवासाचार्य
१२/२/९६

आज परब्रह्म परमात्मा की मुझ पर असीम कृपा हुई, क्योंकि आदरणीय एवं परम श्रद्धेय लोकहितैषी तथा भगवत् प्रिय श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचायजी महाराज के दर्शन हुए यह मेरे पूर्व जन्म के पुण्य का फल ही है।

आज मैं 'श्रीजी' महाराज के करकमलों से लिखित श्लोक शतक को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ कि श्लोकों में भक्तिरस लावण्य सरलता आदि गुण पूर्ण रूप से विद्यमान है।

विनम्र सेवक—
वै० वासुदेव शास्त्री लाटा आयुर्वेदाचार्य
बम्बई
१३/२/९६

वैष्णव जगत् के परमाराध्य प्रातर्वन्द्य आचार्यचरण अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के विगत वर्ष से कुछ शारीरिक अस्वस्थता से वैष्णव जन चिन्तित रहे, किन्तु अभी फरवरी के प्रथम सप्ताह में बम्बई प्रवासावधि में चिकित्सा लेते हुए आपश्री द्वारा की गई अनन्य आराधना श्रीसर्वेश्वर चरणार-

विन्द में "श्रीसर्वेश्वरशतकम्" के रूप में प्रस्तुत हुई ? इससे विलक्षण चमत्कार स्वरूप अनुभव आपश्री को हुआ कि जैसे कोई विशेष व्याधि नहीं रही हो। महर्षि चरक के वाक्यानुसार—

अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारणभेषजात् ।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥

औषधियों का उपचार तो मात्र औपचारिकता थी अथवा निमित्त मात्र ही होता है। वास्तविकता तो श्रीसर्वेश्वर प्रभु की आराधना और प्रभु कृपा ही समस्त आधि-व्याधि--नाशिनी ही नहीं अपितु लोकोत्तरानन्द प्रदायिनी होती है। अतः यह "श्रीसर्वेश्वरशतक" मानवमात्र के कल्याणार्थ श्रीचरणों द्वारा संजीवनी स्वरूप हमें प्रसाद रूप में सुलभ है इससे हम सभी वैष्णवजन आभारी हैं।

सीताराम शास्त्री श्रोत्रियः निम्बार्कभूषण
एम. ए. साहित्याचार्य, शिक्षाशास्त्री

पूर्व प्राचार्य जयपुर
राज० सं० शिक्षा २/३/९६

परम पूज्य आचार्यश्री के सतत सत्साहित्य सर्जन की दिशा में यह एक अद्भुत अद्वितीय उदाहरण है। बम्बई चिकित्सालय में जन सामान्य की दृष्टि से यद्यपि श्रीचरणों के निवास कक्ष में सर्वथा एकान्तवास था, जहाँ परिकर वर्ग भी नहीं, किन्तु हमारे परमाराध्य आचार्यश्री ने अपनी स्वाभाविक दैनिक उपासना के समान ही उक्त एकान्त वातावरण में भी सर्वत्र सदा व्यापक भगवान् श्रीसर्वेश्वर का सान्निध्य प्राप्त करके प्रभु के श्रीचरणों में जो सारस्वत सुरभित सुमन समर्पित करते हुए 'श्रीसर्वेश्वर-

शतक' की महत्वपूर्ण रचना करके एक अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया। यह 'श्रीसर्वेश्वरशतक' आपश्री की रचनाओं में विशेषरूप से स्मरणीय रहेगा।

श्रीचरणकमलचञ्चरीक—
दयाशंकर शास्त्री साहित्यपुराणाचार्य
निम्बार्कभूषण (ब्यावर)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा विरचित 'श्रीसर्वेश्वरशतकम्' महनीय ग्रन्थ है जिसमें परमानन्द-स्वरूप परब्रह्म भगवान् श्रीसर्वेश्वर की महनीय रसोपासना का उत्कृष्ट भाव अभिव्यक्त हुआ है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह आचार्यश्री की प्रत्यक्ष स्वानुभूति है जिससे रुग्णावस्था में प्राण पोषण हुआ है। भक्तों के लिए यह महती प्रेरणा है जो प्रियाप्रियतम के अनन्य भाव से साधित है। मंगलदायी 'श्रीसर्वेश्वर शतकम्' भक्तों का कंठहार बनेगी यही हृदय की पावन भावना है।

दासानुदास—
डॉ० रामप्रसाद शर्मा एम.ए.पी.एच.डी.
निम्बार्कभूषण (किशनगढ़)

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्कतीर्थस्थ निखिल भारतवर्षीय निम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के द्वारा अभिनव प्रणीत 'श्रीसर्वेश्वरशतक' स्तोत्र का मनन किया। महाराजश्री ने शरीर से अस्वस्थ होते हुए भी स्वस्थ मन से रुग्णावस्था में इस स्तवन का प्रणयन बड़े ही

भाव श्रद्धा व निष्ठा से करके एक भगवान् की विशिष्ट भक्तिशक्ति का विलक्षण प्रभाव प्रकट किया है।

परमप्रभु सर्वेश्वर से हार्दिक प्रार्थना है कि महाराजश्री को सदा स्वस्थ व चिरायु रखें ताकि इसी तरह भगवान् के भक्तिपरक सुन्दर स्तोत्रों का निरन्तर प्रणयन होता रहे तथा सम्प्रदाय भी आपकी छत्रछाया में निरन्तर पुष्पित व पल्लवित होता रहे।

—आशुकवि निम्बार्कभूषण **सत्यनारायण शास्त्री** अजमेर

"श्रीसर्वेश्वरशतकम्" पूज्य महाराजश्री की साहित्य माला का आनन्दमय पुष्प है। जिस स्थिति में इसकी रचना हुई है वह शरीर, मन, प्राण और बुद्धि से परे की स्थिति है। शल्य क्रियाजन्य वेदना का प्रभाव शरीरादि में ही रहता है ज्ञानमय अर्थात् आनन्दमयकोश में नहीं रहता। कुरुक्षेत्र में महाभागवत श्रीभीष्म पितामह बाण--शय्या पर देहादि कष्ट का अनुभव कर रहे थे, ज्यों ही भुवनमोहन सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का साक्षात् दर्शन प्राप्त हुआ त्यों ही उनकी सारी वेदना शान्त हुई तथा आनन्दमय दिव्य ज्ञान का स्रोत प्रस्फुटित हुआ जो महाभारत में "शान्ति पर्व-अनुशासन पर्व" संस्कृत वाङ्मय का अप्रतिम भाग है। इसी प्रकार आचार्यश्री को भी बम्बई में चिकित्सालय-प्रवास के समय श्रीसर्वेश्वर प्रभु के सतत चिन्तन-आराधना में अन्तःप्रेरणा मिली जो उन्हीं के स्तवन रूप में यह आनन्दमय पुष्प विकसित हुआ।

इसका दिव्य सौरभ प्राप्त कर समस्त साधकवृन्द अमन्द आनन्द का अनुभव करेंगे ऐसा दृढ़ विश्वास है।

प्राचार्य—	श्रीचरणानुग्रहैककामः—
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय	**वासुदेवशरण उपाध्याय**
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)	निम्बार्कभूषण
जि० अजमेर [राजस्थान)	व्या० सा० वे० आचार्य

परम प्रभु सर्वेश्वर का रूप माधुर्य अनिर्वचनीय है। गुणातीत परमेश्वर की स्वरूप विवेचना स्वयं सर्वेश्वर के अतिरिक्त कौन कर सकता है ? परम आराध्य, पूज्यवर १००८ श्री 'श्रीजी' महाराज के द्वारा प्रणीत 'श्रीसर्वेश्वरशतक' के पठन, मनन एवं श्रवण से यही बोध होता है कि स्वयं सर्वेश्वर, सगुण रूप में अवतरित होकर भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए स्वयं अपने श्रीविग्रह के शृङ्गार का वर्णन किया है। भक्त शिरोमणि, भगवद्रूप वृत्ति को प्राप्त करके ही भगवान् के श्रीविग्रह का वर्णन करते हैं। उस समय भक्त एवं भगवान् में एकरूपता रहती है। वहाँ ध्यान, ध्येय एवं ध्याता की त्रिपुटी ही समाप्त हो जाती है। दोनों में कहीं लेशमात्र भी अन्तर नहीं रहता। इसीलिए भक्त और भगवान् दोनों ही समानरूपेण आराध्य हैं। भक्तप्रवर नाभादासजी ने लिखा है कि—

सब सन्तन निर्णय कियो, श्रुति पुराण इतिहास।
भजवे को दो ही सुघर के हरि के हरिदास ।।

'श्रीसर्वेश्वरशतक' भगवान् सर्वेश्वर के पवित्र स्वरूप की निधि है, भगवद्भक्ति की पारसरूपा मणि है जिसके पुण्य प्रताप से प्राणिमात्र अनेक कलिमल पापों से निवृत्त होकर प्ररमप्रभु सर्वेश्वर के श्रीचरणों की प्रगाढ़ भक्ति प्राप्त कर सकेंगे।

—वैद्य हरिप्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य बम्बई
३०/३/९६

"सर्वेश्वरशतक" के सांगोपांग दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्यश्री के स्वस्थमन की भाषा है परन्तु पढ़ते समय मेरे आर्तमन की भाषा स्वभावत: बन गई और शतक वापस लौटाते

आचार्यश्री की चरण सन्निधि में आर्ति निवर्तक भाषा के रूप में श्रद्धा-सिद्ध हुई है ।

प्रीति पूत स्तवोपलेख पढ़कर इतना ही कह सकता हूँ—

शतकं स्तवनीयस्य सहस्राधिफलप्रदम् ।
लक्षितं कुरुते यस्तु सोऽसंख्यं फलमश्नुते ।।

—राधावल्लभ शास्त्री कचनारिया
निम्बार्कभूषण
दूदू—जयपुर

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर वर्तमान आचार्यचरण श्री "श्रीजी" महाराज यद्यपि कतिपय समय से अस्वस्थ हैं तथा तदर्थ चिकित्सा हेतु बम्बई में बम्बई-अस्पताल में एक सप्ताह से अधिक समय तक निवास भी किया तथापि उसी अवधि में आपने "श्रीसर्वेश्वरशतक" की रचना करके भावुक रसिकजनों के लिये परम मननीय सुभग सुन्दर ग्रन्थ रत्न प्रदान करने का जो अनुग्रह किया है, वस्तुतः वह परमादर्श रूप है । "श्रीसर्वेश्वरशतक" के नित्य नियमित पाठ से सभी भगवज्जनों का परम हित होगा । अति सरल सरस संस्कृत वाङ्मय में यह ग्रन्थ अतिशय उपादेय होगा । भावुकजनों का यह परम कर्तव्य होना चाहिये कि इसका वे श्रद्धापूर्वक नित्य पठन करें जिससे श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अहैतुकी कृपा प्राप्त कर सकें ।

निवेदक—
पं० गोविन्ददास 'सन्त' निम्बार्कभूषण
पुराणतीर्थ धर्मशास्त्री द्वैताद्वैत विशारद
निम्बार्ककोट-अजमेर

प्रधान सम्पादक
"श्रीनिम्बार्क"

प्रातःस्मरणीय श्रीसनकादि महर्षियों के द्वारा संसेवित अर्चा-विग्रहधारी परमाराध्य प्रभु श्रीसर्वेश्वर की रसमयी आराधना में सदा निरत परम पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के द्वारा विरचित मन्त्रमय "श्रीसर्वेश्वरशतक" के पावन श्लोकों को पढ़कर परमानन्द की अनुभूति हुई। श्रीसर्वेश्वर प्रभु के पावनतम अर्थविग्रह का सजन करने वाली ब्रह्मद्रवमयी पुण्यतोया कृष्णागण्डकी का तटवासी होने के नाते हमें द्विगुणित गौरव की अनुभूति इस पावन कृति के अवलोकन से हो रही है।

परमपूज्य श्री "श्रीजी" महाराज उस कल्पवृक्ष के समान हैं जो स्वयं शताधिक तापों एवं कष्टों को सहकर भी आश्रय में आये प्राणियों को पुष्पों, फलों एवं सुशीतल छाया के द्वारा परम सुख प्रदान करता रहता है। अपने अनेकानेक शारीरिक कष्टों की परवाह किये बिना निरन्तर रूप से भगवत्सेवा सुखों की वृष्टि करने वाले कृतिरत्नों का सर्जन आपश्री करते रहते हैं। इस मंगलमयी कृति से साधकवृन्द को परमार्थ पथ का अमोघ पाथेय प्राप्त होगा ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

श्रीचरणों में सदा अवनत—
आचार्य खेमराज केशवशरण भागवताचार्य
काठमांडू—नेपाल
दि० २४/६/१९९६

संस्थापक-संरक्षक—
सनातन धर्म सेवा समिति
नेपाल

* स्वकीय-भावाभिव्यक्ति *

किसी भी परम पावन मङ्गलमय उत्तम कार्य का तभी शुभारम्भ होता है जब सर्वनियन्ता भगवान् श्रीसर्वेश्वर स्वयं कृपा कर प्रेरणा करते हैं। बिना उनकी कृपा के किसी भी कार्य का साङ्गोपाङ्ग सम्पन्न होना संभव ही नहीं।

प्रस्तुत "श्रीसर्वेश्वरशतक" ग्रन्थ के शुभारम्भ के प्रेरक भी परमकरुणावरुणालय कृपापयोधि भगवान् श्रीसर्वेश्वर राधा-माधव प्रभु ही है।

स्वकीय शारीरिक चिकित्साकाल में बम्बई के सुप्रसिद्ध विशालतम बम्बई-हास्पिटल (चिकित्सालय) में प्रविष्ट होकर चिकित्सा की कठिन परिस्थिति में अपने परमाराध्य के चिन्तन-स्मरण पूर्वक उनकी महिमा परक "शतक" ग्रन्थ का प्रणयन हो जाना उन परात्परतत्त्व सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर का अनुग्रह ही मूल है। "श्रीसर्वेश्वरशतक" में श्रीसर्वेश्वर प्रभु के माहात्म्य का उनके व्रजभावपरक एवं निकुञ्जरसबोधक कतिपय प्रसङ्गों का अति संक्षिप्त परिवर्णन हुआ है, यह सभी कुछ श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपापूर्ण प्रेरणा ही सर्वाधार है।

गत वर्ष पौष शुक्ल १३ शुक्रवार वि० सं० २०५१ दिनांक ३०/१२/९४ को किशनगढ़ के निकट अराँई ग्राम में आयुर्वेद चिकित्सा शिविर के आयोजन में प्रवचन करते समय आकस्मिक उदर-वेदना हो गई। दो दिवस स्वकीय आयुर्वेदीय औषधि के

सेवन से वेदना का परिशमन भी हुआ तथापि तृतीय दिवस पुनः वेदना प्रारम्भ होने पर राजस्थान के परम प्रख्यात बांसवाडा वास्तव्य सम्प्रति अजमेर निवासी शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ शल्य चिकित्सक डा० श्रीगुणवन्तसिंहजी झाला के द्वारा चिकित्सा क्रम में सोनोग्राफी तथा एक्सरे आदि आधुनिकतम यान्त्रिक साधनों से पथरी का सन्देह होने पर शल्यक्रिया (आपरेशन) का आश्रय लिया गया जो पन्द्रह इञ्च लम्बाई में सम्पन्न हुआ। चिकित्सक महोदय ने बड़ी ही सावधानी एवं परम कुशलता निष्ठापूर्वक इस कार्य का सम्पादन किया। यद्यपि शल्यक्रिया से वेदना का तो परिशमन हुआ किन्तु तज्जन्य आन्त्रवृद्धि (सर्जिकल-हरनिया) का तथा वृक्क--नलिका में अवरोध उपस्थित हो गया जिसकी वेदना एक वर्ष से यथावत् बनी हुई है, तदर्थं ही चिकित्सार्थं बम्बई के परम निष्ठावान् भक्तजनों की प्रबल भावनानुसार बम्बई जाने की योजना बनी। बम्बई-हास्पिटल के परम प्रसिद्ध समस्त एशिया में ख्याति प्राप्त डा० श्रीअजित फड़के महाभाग ने वृक्क-नलिका के अवरोध को आधुनिक यान्त्रिक सर्वोच्च साधनों से व्यवस्थित कर दिया। इसी चिकित्सा क्रम में दश दिवस बम्बई-हास्पिटल में निवास करने का अवसर मिला। उसी दश दिवस की अवधि में ही "श्रीसर्वेश्वरशतक" का श्रीसर्वेश्वर प्रभु की परम प्रेरणा से शुभारम्भ होकर इसकी सम्पूर्ति हुई। इस चिकित्साकाल में अठारह दिवस बम्बई में निवास किया गया। हास्पिटल के अतिरिक्त शेष निवास भक्तवर श्रीसोहनलालजी श्रीकन्हैया-लालजी श्रीगिरिधरलालजी कासट के स्वकीय भवन पर रहा। उन्होंने बड़ी निष्ठा और तत्परता से सेवा सम्पादन पूर्वक चिकित्सा व्यवस्था की। प्रमुखतः चिकित्सा व्यवस्था में भक्तवर श्रीगोपाल-कृष्णजी छापरवाल एवं श्रीगिरिधरलालजी कासट की सेवा

ग्रादशमय थी। बम्बई के प्राय: समस्त भक्तों द्वारा सेवा-व्यवस्था परम ग्रनुकरणीय है। ६ मास पूर्व चिकित्सा हेतु ही जब बम्बई की यात्रा की, तब भक्तवर श्रीलक्ष्मीकान्तजी पोद्दार के निवास स्थल पर एक सप्ताह पर्यन्त चिकित्सा व्यवस्था की गई थी। श्रीपोद्दारजी ने सपरिकर जो ग्रपनी सेवायें प्रस्तुत की, वस्तुत: परम श्लाघनीय है। डा० श्रीमुकुलजी मेहता ने ग्रपना सम्पूर्ण समय इस चिकित्सा में ही ग्रर्पित कर दिया, यथार्थ में उनका जीवन ग्रत्यन्त गौरवास्पद है। बम्बई (महाराष्ट्र) प्रान्त से ग्रनेक भावुक भक्तजनों ने बम्बई ग्राकर ग्रपनी सेवायें प्रस्तुत कीं। भाटापारा (मध्यप्रदेश) से भक्तवर श्रीपूरणमलजी ग्रग्रवाल ने स्वयं ग्रस्वस्थ रहते हुए वहीं से ग्रपने ग्रात्मज को बम्बई भेजकर ग्रपनी सेवा समर्पित की।

इस उक्त चिकित्साक्रम में मेवाड़महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री स्थल (उदयपुर) ने दश दिवस बम्बई में रहकर समग्र व्यवस्थाग्रों का निर्देशन किया जो नितान्त रूप से ग्रादर्शमय था। विश्वविख्यात श्रीरामकथा प्रवक्ता मानस-मयूर युगसन्त श्रीमुरारी बापू ने दो वार बम्बई पधार कर मार्ग-दर्शन किया। इसी प्रकार श्रीरामानुजाचार्य स्वामी श्री-श्रीनिवासाचार्यजी महाराज (डीडवाना) भी दो बार पधारे ग्रौर स्वास्थ्य सम्बन्धी सौजन्य पूर्ण पावन विचारों से ग्रवगत कराया। इसी प्रकार पुष्टीमार्गीय वल्लभसम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वद्वरेण्य गोस्वामी श्रीश्याममनोहरलालजी महाराज मोटा-मन्दिर–बम्बई ने भी ग्राकर निरामय–मङ्गल कामना की। बम्बई हास्पिटल के व्यवस्थापक श्री सी० जे० जोशी–डाइरेक्टर—बम्बई-ग्रस्पताल, श्रीगोकुलप्रसादजी शर्मा मैनेजर-बम्बई ग्रस्प-ताल, डा० श्रीकृपलानीजी, डा० श्रीकुमारजी, डा० श्रीमोहनजी,

डा० श्रीओझाजी, डा० श्रीअनुजजी शर्मा प्रभृति मूर्द्धन्य महानुभावों का व्यवस्था निर्देशन भी परम सराहनीय था। हास्पिटल के विभागीय चिकित्सकवर्ग एवं सेवारत परिचारक व परिचारिकाओं की भावनापूर्ण सेवा तत्परता भी अनुकरणीय थी। वैद्य श्रीवासुदेवजी शास्त्री लाटा, वैद्य श्रीरामजी शर्मा, वैद्य श्रीहरिप्रसादजी शर्मा-प्रिन्सिपल—आयुर्वेद कोलेज-बम्बई आदि महानुभावों द्वारा चिकित्सा—परामर्श भी परम प्रशंसनीय था। स्वकीय परिकर में रसिकमोहनशरण, व्रजमोहन शर्मा, ओमप्रकाश शर्मा, वैद्य बालमुकुन्द शर्मा, वैद्य धरणीधर उपाध्याय प्रभृति सभी की सेवापरायणता परम श्लाघनीय है। बम्बई वास्तव्य समस्त भगवज्जनों की निष्ठापूर्वक जो सेवाभिरुचि वह नितान्त रूप से अत्यन्त स्पृहणीय है। इसी प्रकार दैनिक सायं—संकीर्तन में श्रीकाशीनाथजी मिश्रा (तबला वादक) का संकीर्तन में सहयोग भी अनुकरणीय था।

चिकित्सा सम्बन्धी कार्यों में भक्तवर श्रीब्रजमोहनजी छापरवाल, श्रीप्रकाशचन्दजी बाहेती, श्रीगणेशजी भराडिया, श्रीटीकमचन्दजी तोषनीवाल, श्रीरतनलालजी बालदी, कामदार श्रीशम्भुप्रसादजी गोयल, श्रीविमलजी तोतला, श्रीसुखदेवजी मून्दडा, श्रीमुरारीलालजी वर्मा (अजमेर) इत्यादि सूरत-बम्बई निवासी भगवज्जनों की सेवायें भी उल्लेखनीय थी।

आचार्यपीठस्थ श्रीनवलकिशोरजी व्यास एवं श्रीमाधवशरणजी, पं० श्रीमुरलीधरजी शास्त्री, पं० श्रीदयाशंकरजी शास्त्री,

पं० श्रीभँवरलालजी उपाध्याय, पं० श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय प्राचार्य-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, प० श्रीहरिश्चन्द्रजी लाटा, वैद्य श्रीहनुमानप्रसादजी मिश्र, वैद्य श्रीवैकुण्ठनाथजी शर्मा, पं० श्रीशंकरलालजी व्यास, पं० श्रीविश्वामित्रजी व्यास आदिकों द्वारा सम्पादित समवेत माङ्गलिक श्रीभगवत्प्रार्थना से तथा जयपुरस्थ पं. श्रीसीतारामजी श्रोत्रिय एवं भक्तवर श्रीकल्याणप्रसादजी सूतवालों की सत्प्रेरणा से विभिन्न भक्तवृन्दों द्वारा सामूहिक भगवदीय सदनुष्ठान से एवं विभिन्न स्थलों पर अनेकानेक भगवत्प्रार्थनाओं अनुष्ठानों से स्वकीय स्वास्थ्य में यथेष्ठ लाभ प्राप्त होना स्वाभाविक है ।

चिकित्सा की इस अवधि में संक्षेपात्मक "श्रीसर्वेश्वरशतक" ग्रन्थ का प्रणयन भी श्रीसर्वेश्वर प्रभु का परम कृपाप्रसाद ही प्रमुख है । मेधावी श्रद्धालु विद्वन्महानुभाव एवं परम भक्तिनिष्ठ, भावुक भक्तजन यदि इस अतीव संक्षेपात्मक ग्रन्थ का अनुशीलन, मनन करेंगे तो निश्चय ही वे आध्यात्मिक क्षेत्र में परम लाभान्वित होंगे ऐसी हमारी मान्यता एवं सभी के प्रति श्रीसर्वेश्वर प्रभु से मंगलकामना करते हैं ।

-श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

❋ भज चञ्चल मन श्रीसर्वेश्वर ❋

(१)

कृपा–पयोनिधि श्रीसर्वेश्वर ।

भव-वन भटकत कालचक्रगति,-कवलित जीवन भक्तिसुधा भर

करुणालय श्रीराधामाधव, निर्हैतुक अब अनुकम्पा कर ।

'शरण सदा राधासर्वेश्वर' श्रीशुभ-दृष्टि दुरित--ताप हर ।।

(२)

श्रीसर्वेश्वर प्रतिपल भजिये ।

जगत कार्य सब विविधरूपमय, अतिशय बाधक तुरत हि तजिये

श्रीहरिदर्शन अविरल आतुर, निज मति-मानस अविचल करिये

'शरण सदा राधासर्वेश्वर' भक्तिसुधारस जीवन भरिये ।।

(३)

भज चञ्चल मन श्रीसर्वेश्वर ।

जिन शुभ श्रीवपु पावन दर्शन, कलि-कल्मषहर परम मनोहर ।।

कलित–कल्पतरु युगलविहारी, राधामाधव अतिकरुणाकर ।

'शरण सदा राधासर्वेश्वर' जीवन तब ही सार्थक सुन्दर ।।

(४)

श्रीसर्वेश्व॰ दर्शन करिये ।

महा जगत के प्रिय कारज तजि, प्रभु-दर्शन हित मन्दिर चलिये

निज चञ्चल-मन पावन करके, श्रीसर्वेश्वर जय उच्चरिये ।

'शरण सदा राधासर्वेश्वर' अनुपम मञ्जुल आनद लहिये ।।

—श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

❋ श्रीसर्वेश्वरो जयति ❋

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज-
विरचितं-

❋ श्रीसर्वेश्वरशतकम् ❋

प्रभुं सर्वेश्वरं स्मृत्वा श्रीहंसं सनकादिकान् ।
श्रीनारदञ्च निम्बार्कं श्रीगुरुचरणाम्बुजम् ।।१।।

श्रीसर्वेश्वरप्रभोर्दिव्य-स्वरूपशतकं मया ।
प्रभोर्माहात्म्यरूपञ्च श्लोकात्मकं विरच्यते ।।२।।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु, श्रीहँस भगवान्, महर्षिवर्य श्रीसनकादिक, देवर्षिवर्य श्रीनारदजी, श्रीमन्निम्बार्क भगवान् एवं अपने श्रीगुरु चरणकमलों का स्मरण करके श्रीसर्वेश्वर प्रभु के माहात्म्यस्वरूप श्लोकात्मक "श्रीसर्वेश्वरशतक" का प्रणयन कर रहे हैं ।

(१)

श्रीसनकादिसंसेव्यं गुञ्जाफलसमाकृतिम् ।
शालग्रामस्वरूपञ्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२)

महर्षिसनकादिभ्यो देवर्षिनारदेन वै ।
यत्प्रलब्धं महादिव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३)

श्रीनारदाच्च सम्प्राप्तं श्रीमन्निम्बार्कदेशिकैः ।
एवं परम्पराप्राप्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४)

दक्षिणावर्तचक्रेण चर्चितं चारुदर्शनम् ।
श्यामलं सुप्रभापूर्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(५)

राधाकृष्णस्वरूपञ्च श्रीवृन्दाविपिनेश्वरम् ।
यमुनाकूलसञ्चारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६)

परात्परतरं ब्रह्म रसशेखरमच्युतम् ।
त्रिविधतापहर्तारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

[१]

श्रीसनकादि महर्षियों द्वारा संसेवित गुञ्जाफल सदृश (अर्थात् लघु रूपात्मक रत्ती सदृश) शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अभिवन्दना करते हैं।

[२]

श्रीसनकादि महर्षियों द्वारा देवर्षि नारद को शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की यह सेवा प्राप्त हुई, ऐसे इन परम दिव्य स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अभिनमन करते हैं।

[३]

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की यही सेवा देवर्षिवर्य श्रीनारदजी से सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य श्री को प्राप्त हुई, इस प्रकार परम्परा-प्राप्त भगवान् श्रीसर्वेश्वर को प्रणाम करते हैं।

[४]

दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित दिव्यप्रभामय सुन्दरतम परम दर्शनीय श्यामल स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की वन्दना करते हैं।

[५]

श्रीयमुनाजी के सुभग सुरम्य तट पर नित्य विहार परायण वृन्दावनेश्वर राधाकृष्णस्वरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर को प्रणाम समर्पित है।

[६]

आध्यात्मिक, आधिवैदिक, आधिभौतिक इन त्रिविध तापों को हरण करने वाले परात्परब्रह्म अच्युत रसेश्वर भगवान् श्रीसर्वेश्वर की अभिवन्दना करते हैं।

(७)

व्रजे गोवर्धने रम्ये निम्बग्रामे सुशोभितम् ।
व्रजाङ्गनाभिः संचिन्त्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८)

गन्धर्व-किन्नरै-र्गेयं समाराध्यञ्च निर्जरैः ।
अद्भुतं महिमापूर्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९)

केशेन्द्रैरीडितं चारु सृष्टिबीजं रसाऽर्णवम् ।
अचिन्त्यं शाश्वतं पूर्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१०)

प्रपन्नाऽऽर्तिप्रहर्तारं कृपाधाम-दयाकरम् ।
सनातनं सेव्यमानं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(११)

शिखिपिच्छधरं कृष्णं मुरली-मञ्जुदर्शनम् ।
व्रजन्तं यमुनाकूले नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

[७]

व्रजधाम में परम रमणीय गिरिराज गोवर्धन के सुरम्य सुपावन क्षेत्र में परम सुशोभित निम्बग्राम में नित्य विराजित व्रजाङ्गनाओं के अन्तर्मानस द्वारा सर्वदा चिन्तनीय स्मरणीय भगवान् श्रीसर्वेश्वर को नित्य अभिवन्दन करते हैं।

[८]

गन्धर्व, किन्नरादि द्वारा सर्वदा प्रगीयमान देववृन्दों से सतत समाराधित, परम अद्‌भुत महामहिमामय श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रणाम अर्पित है।

[९]

ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि देवगण करबद्ध भावनिष्ठ होकर जिनकी सदा स्तुति करते हैं, चेतनाचेतनात्मक समग्र सृष्टि के एकमात्र आधारभूत जो मूल कारण है, रसार्णव अर्थात् परमानन्द रस समुद्र हैं, जो सदा सर्वदा विद्यमान हैं, देव-ऋषि-मुनियों द्वारा जिनके दिव्य स्वरूप का चिन्तन भी दुष्कर है ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीसर्वेश्वर का अभिनमन करते हैं।

[१०]

शरणागतजनों के त्रिविध तापों को हरने वाले कृपा के धाम परम दयालु सदा सनातन स्वरूप परम सेवनीय अर्चनीय श्री-सर्वेश्वर प्रभु को वन्दन करते हैं।

[११]

मयूर के मनोहर पंख से जिनका श्रीमस्तक परम सुशोभित है, वंशी धारण किये हुए अतीव सुन्दर स्वरूप, श्रीयमुनाजी के अति कमनीय सुरम्य तट पर विहारनिरत श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सदा वन्दना अपना अभीष्टतम परम कर्तव्य है।

(१२)

कोटिकन्दर्पलावण्यं लसत्कनककुण्डलम् ।
दिव्याऽनन्तगुणाऽम्भोधिं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१३)

वृन्दावने महारम्ये निकुञ्जे यमुनातटे ।
राधया राजितं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१४)

मुक्ता-प्रवालमाल्येन दर्शनीयं प्रियाप्रियम् ।
निकुञ्जलीलया रम्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१५)

सखीभिर्नित्यमाराध्यं राधामाधवसुन्दरम् ।
सौन्दर्यसागरँ हृद्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१६)

गीताज्ञानोपदेष्टारं चक्रराजकराम्बुजम् ।
कोटिब्रह्माण्डसर्वेशं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

[१२ [

करोड़ों कामदेवों से भी अतिशय सुन्दर, स्वर्ण के देदीप्यमान कुण्डलों को धारण किये हुए दिव्यातिदिव्य अनन्त गुणों के महान् समुद्र रूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रणामाञ्जलि समर्पित है।

[१३]

परम सुरम्य परमदिव्यतम श्रीवृन्दावन में श्रीयमुनाजी के अतिपावन रमणीय तट पर श्रीनिकुञ्जधाम में परम सुशोभित भगवान् श्रीकृष्ण स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नित्य वन्दना करते हैं।

[१४]

मोतियों की एवं मूंगा की मालाओं से अत्यन्त दर्शनीय निकुञ्ज की परम ललित, परम सरस मधुरातिमधुर लीलाओं से अतिशय मनोहर प्रियाप्रिय राधामाधवरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर का अभिवादन करते हैं।

[१५]

निकुञ्ज सखियों के द्वारा नित्य समाराधित सुन्दरता के महाधिष्ठान समुद्रस्वरूप अतिकमनीय अतिशयमनोहर अतिरमणीय श्रीराधामाधव सर्वेश्वर भगवान् को कोटि-कोटि प्रणाम।

(१६)

श्रीमद्-गीता के परम उपदेष्टा जिनके करकमल में चक्रराज श्रीसुदर्शन सुशोभित है, अनन्तकोटिब्रह्माण्डों के अधीश्वर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अभिवन्दना करते हैं।

(१७)

गोक्षीरसारचौरञ्च धेनुरक्षणतत्परम् ।
गोवर्धने व्रजक्षेत्रे नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१८)

कालिन्द्याश्चिन्मये कूले नानारत्नैः सुमण्डिते ।
व्रजन्तं राधया सार्द्धं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१९)

तमालतरुकुञ्जेषु सखीभिः सह शोभितम् ।
राधामाधवगोविन्दं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२०)

सच्चिन्मये व्रजे धाम्नि वृन्दारण्ये रसाऽर्णवे ।
निकुञ्जकेलिसंलग्नं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२१)

सेवोपकरणैः सार्द्धं हितु–हरिप्रियाऽऽदिभिः ।
नित्यं सखीजनैः सेव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१७)

गोपाङ्गनाओं की गायों का सुन्दर सद्लोनी माखन को चुराने वाले गोमाताओं की सर्वविध सुरक्षा में सदा तत्पर व्रज के पावन क्षेत्र में अतिशय शोभायमान गिरिराज श्रीगोवर्धन अर्थात् गोवर्धन के ही अञ्चल में अवस्थित निम्बार्कतप:स्थली पर विराजित श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नित्य वन्दना करते हैं।

(१८)

श्रीयमुनाजी के परमानन्दप्रद रमणीय तट जो मुक्ता-प्रवाल-माणिक्यादि नानाविध रत्नों से जटित है, वहाँ नित्यनिकुञ्जेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधा के साथ विहरण करते हुए श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अभिनमन है।

(१९)

तमाल वृक्षों की सघन कुञ्जों में नित्य सहचरी परिकर के साथ अतिमनोहर राधामाधव गोविन्द श्रीसर्वेश्वर प्रभु का नित्य अभिवन्दन करते हैं।

(२०)

व्रजधाम में सच्चिद्घनरूप रससिन्धुस्वरूप श्रीमद्वृन्दावन में श्रीनिकुञ्जलीला में अभिरत श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अभिनमन करते हैं।

(२१)

नानाविध सेवा-सामग्री के साथ श्रीहितु-हरिप्रिया आदि अगणित सखीपरिकर से परिसेवित भगवान् श्रीसर्वेश्वर को प्रणतिपुरस्सर अभिनमन है।

(२२)

भृङ्गैः प्रगुञ्जिते कुञ्जे कोकिला-कीरकूजिते ।
लीलारतं रसब्रह्म नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२३)

राधया प्रियया साकं सखीभिः परिसेवितम् ।
रासलीलारतं दिव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२४)

अनन्तवैभवं कृष्णं वृन्दावनविहारिणम् ।
कालिन्द्याः पुलिने रम्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२५)

कल्पद्रुमे व्रजे कुञ्जे वृन्दारण्ये प्रियायुतम् ।
सखीभिः सेवितं चारु नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२६)

मयूर-सारिका-कीर-कोकिलैरभिगुञ्जिते ।
श्रीवृन्दाविपिने कुञ्जे नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२७)

अनन्तकिङ्करीवृन्दै राधया प्रियया सह ।
महारासरतं रुच्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२२)

भ्रमरों की मधुर गुञ्जार से अतीव चित्ताकर्षक, शुक-कोकिल आदि खगवृन्दों की कलित कूजन से प्रकूजित मञ्जुल कुञ्ज में ललितलीलानिरत रसमय परब्रह्म भगवान् श्रीसर्वेश्वर को नित्य नमन।

(२३)

नित्य नव निकुञ्ज सखीवृन्दों से संसेवित, रासेश्वरी प्रिया श्रीराधा के साथ नित्य दिव्य रासलीला निरत श्रीसर्व्रेश्वर प्रभु की वन्दना करते हैं।

(२४)

श्रीयमुनाजी के सुरम्य पावन पुलिन पर सुशोभित अनन्त-वैभवस्वरूप, वृन्दावनविहारी भगवान् श्रीसर्वेश्वर को सश्रद्ध प्रणाम करते हैं।

(२५)

व्रजधाम के कल्पवृक्षरूप श्रीवृन्दावन में मञ्जु कुञ्ज में सहचरियों से सम्यक् प्रकार परिसेवित श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अभि-वन्दनपूर्वक नमस्कार करते हैं।

(२६)

शुक-मयूर-मैना-कोयल आदि कमनीय खगवृन्दों के कलित कूजन से परिव्याप्त श्रीवृन्दावन की मञ्जुल कुञ्जों में विराजित श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नित्यशः अभिवादन करते हैं।

(२७)

वृन्दावनाधीश्वरी रासेश्वरी श्रीराधा प्रिया एवं असंख्य सखी समूह के साथ जो महारास में अभिरत है उन श्रीसर्वेश्वर को नमन करते हैं।

(२८)

पीताम्बरधरं कृष्णं शृङ्ग-वेत्रसुमञ्जुलम् ।
वेणुविभूषितं दिव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२९)

सौरी-गभीरधारायां राधया सह माधवम् ।
नौका-विराजितं सायं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३०)

नीलाम्बुजकरं कुञ्जे विहरन्तं सखीप्रियम् ।
राधया प्रियया सार्द्धं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३१)

विविधै रत्नमाणिक्यै-र्मण्डिते रासमण्डले ।
रासलीलारतं कुञ्जे नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३२)

कदल्यम्बुजपत्रस्थ-बहुविधफलान्यपि ।
स्वादयन्तं रसागारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३३)

द्राक्षाऽऽम्र-कदली-जम्बू-नारङ्गी-दाडिमानि च ।
अदन्तं राधिकाकृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(२८)

सन्ध्या के सुभग शीतल समय पर श्रीयमुनाजी की अत्यन्त गहरी धारा में सर्वेश्वरी श्रीराधा के साथ नौका में विराजित भगवान् माधव श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रणाम करते हैं।

(२९)

मधुर मुरली को धारण किये हुए शृङ्ग–लकुट से परिशोभित दिव्य पीताम्बरधारी भगवान् कृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु को सर्वदा कोटि–कोटि अभिवन्दन।

(३०)

परमाह्लादिनी निकुञ्जेश्वरी श्रीराधा के साथ सखियों के सर्वाधार सर्वप्रिय नीलकमल को अपने करकमल में धारण किये हुए भगवान् श्रीसर्वेश्वर को नमन करते हैं।

(३१)

मुक्ता-प्रवाल-वैडूर्य-गोमेद-पद्मराग आदि अनेकविध रत्नों से जटित निकुञ्ज रासमण्डल में रासलीला अभिरत श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अभिवन्दना करते हैं।

(३२)

केला एवं कमल के हरित पत्रावली पर सुशोभित नाना-प्रकार के फलों का आस्वादन लेते हुए रसनिधि भगवान् श्रीसर्वेश्वर को प्रणाम समर्पित करते हैं।

(३३)

अङ्गूर-आम--केला--जामुन,--सन्तरा--अनार आदि विविध फलों का सेवन करते हुए भगवान् राधाकृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अभिनमन करते हैं।

(३४)

यूथिका-मल्लिका-चम्पा-मालती-पुष्पमालया ।
श्रीवने शोभितं श्यामं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३५)

कन्दुक-क्रीडने मग्नं सखीभि राधया सह ।
भानुजापुलिने रम्ये नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३६)

शारदीयनिशामध्येऽनन्तसखीभिरावृतम् ।
विलसन्तं महारासे नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३७)

निकुञ्ज-कुञ्जबीथीषु व्रजन्तं श्रीरसेश्वरम् ।
प्रियाराधायुतं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३८)

श्रीनिकुञ्जेश्वरी-राधा-प्रियया सह माधवम् ।
रासलीलारतं नित्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३९)

नवनवायमानासु व्रजबालासु शोभितम् ।
श्रीकृष्णचन्द्रकुञ्जेशं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४०)

मन्दं मन्दं व्रजे कुञ्जे विहरन्तं व्रजेश्वरम् ।
माधुर्यादिरसाधारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(३४)

जुही-मोगरा-चम्पा-मालती आदि सुगन्धित पुष्पों की सुन्दर मालाओं से विभूषित श्रीवृन्दावन में विराजित श्यामसुन्दर श्री-सर्वेश्वर प्रभु को नित्य प्रणति पूर्वक नमन करते हैं।

(३५)

परम रमणीय यमुना पुलिन पर श्रीराधिकाजी एवं नित्य सखी परिकर के साथ कन्दुक-क्रीडा में परमतन्मय भगवान् श्री सर्वेश्वर को अभिवादन।

(३६)

शरद्रात्रि के मध्यभाग में अनन्त सखी परिकर के साथ महारास करते हुए श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रतिपल अभिवन्दन।

(३७)

निकुञ्ज-कुञ्ज की मनोहर गलियों में श्रीराधा सहित विचरण करते हुए रसेश्वर भगवान् कृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अनवरत अभिवादन।

(३८)

नित्यनिकुञ्जेश्वरी श्रीराधाप्रिया के साथ नित्य रासलीला निरत भगवान् माधव श्रीसर्वेश्वर को प्रणाम अर्पित करते हैं।

(३९)

नित्य नवनवायमान व्रजगोपीजनों के मध्य अतिशय सुशोभित नित्यनवनिकुञ्जेश्वर कृष्णचन्द्र श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रतिपल अभिवन्दन।

(४०)

व्रजधाम की मञ्जुल कुञ्जों में मन्द-मन्द गति से विहरण करते हुए सौन्दर्य-माधुर्य-कारुण्य-लावण्यादि दिव्यरससिन्धु व्रजे-श्वर भगवान् श्रीसर्वेश्वर को कोटिशः प्रणाम समर्पित करते हैं।

(४१)

राधा–राधेति–राधेति–वदन्तं श्रीमुखेन वै ।
श्रीमन्मुकुन्दगोविन्दं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४२)

कुञ्जे सिंहासनारूढं श्रियया राधयाऽन्वितम् ।
राधाविहारिणं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४३)

अभिनवघनश्यामं कञ्जनेत्रं स्मिताननम् ।
कुटिलकुन्तलं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४४)

वृन्दारकैर्हृदाऽऽराध्यं समुपास्यं सुधीजनैः ।
ऋषीश्वरैः सदा सेव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४५)

आदाय श्रीवने राधां रासेश्वरीं हरिप्रियाम् ।
व्रजन्तं विहसन्तञ्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४६)

तमालतरुकुञ्जेषु सखीवृन्दैः सुसेवितम् ।
रसिकैर्नितरामीड्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४१)

स्वकीय परमाह्लादिनी सर्वेश्वरी रसिकेश्वरी श्रीराधाप्रिया के श्रीराधे, श्रीराधे, श्रीराधे इन मधुरातिमधुर रसमय दिव्यतम नाम ध्वनि को श्रीमुखारविन्द से उच्चारण करते हुए श्रीमन्मुकुन्द-गोविन्द श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अभिवादन करते हैं।

(४२)

श्रीजी श्रीराधिकाजी के साथ कुञ्जमहल में सिंहासन पर विराजमान राधाविहारी कृष्ण श्रीसर्वेश्वर को हृदय से अभि-वादन करते हैं।

(४३)

कमलनयन, मन्दस्मित मुखारविन्द, नवीनमेघ के सदृश श्यामलस्वरूप, घुंघराली अलकावली से परिशोभित भगवान् कृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अहर्निश प्रणाम करते हैं।

(४४)

देव समूह के हृदय से समाराधित, विद्वज्जनों द्वारा समुपा-सित ऋषि-मुनिवृन्दों द्वारा सर्वदा सेवित भगवान् सर्वेश्वर की अभिवन्दना करते हैं।

(४५)

श्रीवृन्दावन में रासेश्वरी हरिप्रिया श्रीराधा को साथ लेकर गलबयियाँ दिये हुए मन्दस्मितमुख से विहार करते भगवान् श्री सर्वेश्वर को अभिनमन करते हैं।

(४६)

सघन तमाल वृक्षों की मञ्जुल कुञ्जों में रसिकजनों द्वारा सतत स्तुति किये गये सखीसमूह से परिसेवित श्रीसर्वेश्वर प्रभु को वन्दन करते हैं।

(४७)

स्वर्णचामरहस्तैश्च पुष्प–स्तवकराशिभिः ।
सखीवृन्दैः समाराध्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४८)

दिव्यातिदिव्यरूपञ्चाऽचिन्त्यं विधि-भवादिकैः ।
सद्भिः स्वान्ते सदा सेव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४९)

नवनिकुञ्जहर्म्ये च कुसुमसौरभान्विते ।
हेमसिंहासनासीनं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(५०)

कुन्द--कुसुम--मालाभिरतीवपरिशोभितम् ।
सव्यजनसखीसेव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(५१)

केकिवर्हकराम्भोजै र्वृन्दारण्ये सखीव्रजैः ।
वीज्यमानं व्रजाधीशं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(५२)

पाटलीपुष्प–वाष्पाम्बु–सीकरैः सिक्तविग्रहम् ।
तद्दिव्यसौरभाऽवाप्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(५३)

प्रावृट्काले लताकुञ्जे नवनीलाऽभ्रवारिभिः ।
अभिषिक्तं प्रसन्नञ्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(४७)

स्वर्ण मण्डित सुन्दर चँवरों को अपने करकमलों में धारण किये हुए पुष्पों के गुच्छों के समूह से युक्त सखीवृन्दों से प्रिया-प्रियतम राधामाधव श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नित्य वन्दना करते हैं ।

(४८)

ब्रह्मा-शिवादि द्वारा भी जिनका स्वरूप अचिन्त्य है उत्तम-श्लोक सन्त महापुरुषों द्वारा सदा संसेव्य हैं दिव्यातिदिव्य स्वरूप में सर्वदा विराजमान श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रणाम समर्पित है ।

(४९)

विविध पुष्पों की दिव्य पावन सुगन्ध से अतिशय सुगन्धित नित्यनवनिकुञ्ज महल में स्वर्ण के सिंहासन पर विराजित भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रणाम सुमनाञ्जली समर्पित है ।

(५०)

कुन्द पुष्पों की मालाओं से अत्यन्त शोभायमान परमशीतल सुखद पँखा हाथ में लिए हुए सखीजनों से नित्य संसेव्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की मनसा, वाचा, कर्मणा प्रतिदिन अभिवन्दन ।

(५१)

श्रीवृन्दावन में मोरपंख हाथ में लिये हुए सखी परिकर द्वारा वायुसेवा से प्रसन्नमनस्क व्रजाधीश श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नियमित अभिवन्दना करते हैं ।

(५२)

गुलाब जल से अभिषिक्त है जिनका श्रीवपु और उसकी दिव्य सौरभ से सुरभित भगवान् श्रीसर्वेश्वर को नमन करते हैं ।

(५३)

वर्षा ऋतु काल में लता कुञ्जों के मध्य नूतन श्यामघटा के अभिवर्षण के जलराशिकणों से अभिषिक्त प्रमुदित भगवान् श्रीसर्वेश्वर की वन्दना करते हैं ।

(५४)

श्रावं श्रावं सखीवार्तां मुदितं श्रीरसेश्वरम् ।
अत्यन्तकमनीयञ्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(५५)

दर्शं दर्शं लतारन्ध्रैः खगवृन्दानि सर्वतः ।
आह्लादितं रसासिक्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(५६)

वृन्दावनमहारस्य – कुञ्जोपकुञ्जमन्दिरे ।
सखीभिरर्चितं चारु नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(५७)

नवनीतहरं देवं वंशीकरसरोरुहम् ।
पीताम्बरधरं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(५८)

नन्दनन्दनगोविन्दं मुकुन्दं व्रजवल्लभम् ।
परमानन्दसन्दोहं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(५९)

राजीवलोचनं दिव्यं हार–केयूरभूषितम् ।
शरण्यं गोपिकाप्राणं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(५४)

सखीजनों की पारस्परिक रसमयी वार्ता को श्रवण कर परम प्रमुदित अत्यन्त कमनीय स्वरूप रसेश्वर श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अभिनमन करते हैं।

(५५)

गहन लताकुञ्जों के छिद्रों से पक्षीगणों के मनोहर समूह के अवलोकन करने पर परम आह्लादित आनन्दमग्न भगवान् श्री-सर्वेश्वर को पुनः पुनः प्रणाम।

(५६)

श्रीवृन्दावन की अत्यन्त रमणीय कुञ्ज-उपकुञ्ज मन्दिर में सहचरी परिकर द्वारा सम्यक् प्रकार से समर्चित भगवान् श्रीसर्वेश्वर का अभिवादन पूर्वक वन्दन करते हैं।

(५७)

जिनके करकमलों में वंशी सुशोभित है, पीताम्बर धारण किये हुए माखनचोर भगवान् कृष्ण श्रीसर्वेश्वर को प्रणति पूर्वक अभिवन्दन।

(५८)

परमानन्द के परमाधार व्रजवासियों के परमप्रिय ऐसे नन्दनन्दन गोविन्द मुकुन्द श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नित्य वन्दना करते हैं।

(५९)

अतीव सुन्दर दिव्य हार तथा केयूर (लाजूबन्द) आदि माङ्गलिक आभूषणों से समलङ्कृत कमलनयन जो सभी के एक-मात्र शरण्य हैं आधार हैं जो गोपाङ्गनाओं के परम जीवनाधार हैं ऐसे दिव्य स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नित्य नमस्कार।

(६०)

काश्मीरदिव्यपङ्केन तिलकाऽऽचर्चिताऽऽननम् ।
ऊर्ध्वपुण्ड्रेण राजन्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६१)

जलविहारलीलायां निरतं श्यामसुन्दरम् ।
श्रीराधाप्रियया साकं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६२)

वसन्तसमये प्रातः सहचरीभिरच्युतम् ।
सेव्यमानं मुकुन्दञ्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६३)

राधाकृष्णं सुधापूर्णं कुञ्जकेलिविहारिणम् ।
कुञ्जाऽऽलिभिः सदा सेव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६४)

विशाखा-ललिता-चित्रा-तुङ्गविद्यासखीगणैः ।
अनारतं हृदाऽऽराध्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६५)

हितु–हरिप्रियोपास्यं नित्यकुञ्जसखीडितम् ।
रससिन्धुं प्रियालालं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६०)

केशर के कमनीय तिलक को धारण किये हुए ऐसे परम सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक से अतिशय सुशोभित भगवान् श्रीसर्वेश्वर को अभिनमन करते हैं।

(६१)

अपनी प्राणप्रिया श्रीराधा सहित जलविहार लीला में अभिरत श्यामसुन्दर भगवान् श्रीसर्वेश्वर को मनसा, वाचा, कर्मणा अभिवन्दन करते हैं।

(६२)

ऋतुराज वसन्त के पावन अवसर पर प्रभातवेला में सहचरियों से संसेवित भगवान् अच्युत मुकुन्द श्रीसर्वेश्वर को पुनः-पुनः अभिवन्दन करते हैं।

(६३)

निकुञ्ज सखियों द्वारा निरन्तर संसेवित अमृतरसरूप कुञ्जकेलि-विहारनिरत भगवान् राधाकृष्ण श्रीसर्वेश्वर की प्रतिपल अभिवन्दना करते हैं।

(६४)

विशाखा, ललिता, चित्रा, तुङ्गविद्या आदि प्रमुख अष्टसखियों से समाराधित भगवान् श्रीसर्वेश्वर को निरन्तर अभिवन्दन करते हैं।

(६५)

नित्यनिकुञ्ज सखीजनों में हितु-हरिप्रिया के परमोपास्य एवं निकुञ्ज--सखी समूह से सम्प्रार्थित रससिन्धु प्रियालाल श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नित्यशः अभिवन्दना करते हैं।

(६६)

श्रीकृष्णचन्द्रगोपालं यशोदानन्दनं हरिम् ।
नारायणं परं ब्रह्म नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६७)

वसुदेवात्मजं देवं देवकीनन्दनं परम् ।
सर्वान्तर्यामिणं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६८)

दैत्यान्तकं महाविष्णुं बलरामानुजं प्रियम् ।
प्रपन्नतापहर्तारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६९)

ऋषि-मुनीश्वरैर्देवै र्योगिभिः सततं स्मृतम् ।
वेदादिशास्त्रसद्गीतं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७०)

श्रुति-सूत्र-स्मृतिग्रन्थैः पुराणैः प्रतिपादितम् ।
तन्त्रादिशास्त्रसम्पाद्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७१)

कंससंहारकर्त्तारं पूतनामोक्षदायकम् ।
गो-गोप-गोपिकाऽऽधारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(६६)

श्रीयशोदानन्दन परब्रह्म हरि नारायण भगवान् कृष्णचन्द्र गोपाल श्रीसर्वेश्वर प्रभु का सर्वविध रूप से अभिनमन करते हैं।

(६७)

वसुदेवनन्दन देवकीनन्दन सर्वान्तर्यामी भगवान् कृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नित्य नमन करते हैं।

(६८)

शरणागतजनों के कष्टों का निवारण करने वाले असुरों के संहारक बलरामजी के प्रिय लघुभ्राता महाविष्णुरूप भगवान् श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण सर्वेश्वरस्वरूप को सश्रद्ध प्रणाम समर्पित है।

(६९)

ऋषि-मुनि-योगीजनों एवं देववृन्दों द्वारा जो निरन्तर स्मरण किये जाते हैं, वेदादियावन्निखिलशास्त्र जिनकी लोकोत्तर दिव्य माहात्म्य का परिवर्णन करते हैं, ऐसे भगवान् श्रीसर्वेश्वर को नमन करते हैं।

(७०)

श्रुति-स्मृति-सूत्र-पुराणादि समस्त शास्त्र जिनका प्रतिपादन करते हैं, तन्त्रादि शास्त्र भी उन्हीं निखिलान्तरात्मा के अनिर्वनीय स्वरूप का विवेचनात्मक वणन करते हैं, ऐसे परम मनोहर श्री सर्वेश्वर प्रभु की अभिवन्दना करते हैं।

(७१)

महाबलशाली कंस के संहारकर्ता पूतना को मोक्ष प्रदान करने वाले गोवृन्द गोपगण एवं व्रजगोपीजनों के सर्वस्व जीवनाधार श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रणाम समर्पित करते हैं।

(७२)

व्रजेशं कल्पवृक्षञ्च श्रीगोवर्धनधारिणम् ।
बलरामयुतं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७३)

दैत्यविमर्दने दक्षं तृणावर्तान्तकं हरिम् ।
प्रपन्नक्लेशहर्त्तारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७४)

अनुकम्पाकरं देवं भक्तस्वान्ते प्रतिष्ठितम् ।
सर्वात्मानञ्च सर्वज्ञं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७५)

समस्तदेव-देवेशं देवैस्सदा सुसेवितम् ।
कारुण्यसमधिष्ठानं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७६)

श्रीधरं श्रीयुतं कृष्णं श्यामलं सुमनोहरम् ।
कन्दर्पमोहनं वन्द्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७७)

ब्रह्मविद्वेदविद्भिश्च धीरैरतितरां स्तुतम् ।
श्रीश्यामसुन्दरं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७२)

कल्पतरुरूप व्रजेश्वर गिरिराज गोवर्धनधारी बलराम सहित भगवान् कृष्णचन्द्र श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अनवरत अभिवन्दन करते हैं।

(७३)

दैत्यों के दमन करने में अत्यन्त प्रवीण प्रबल पराक्रमी तृणावर्तासुर का वध करने वाले शरणागतजनों के क्लेश को हरने वाले श्रीहरि भगवान् कृष्ण सर्वेश्वर को प्रणाम अर्पित करते हैं।

(७४)

भक्तों के हृदय में विराजमान सर्वात्मा सर्वज्ञ अनुकम्पा करने वाले देवता स्वरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नित्यप्रति अभिवादन।

(७५)

सम्पूर्ण देवों के भी देवेश, देववृन्दों द्वारा सर्वदा सेवित, करुणा के एकमात्र अधिष्ठान श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अभिनमन करते हैं।

(७६)

कन्दर्प अर्थात् कामदेव को विलज्जित करने वाले परम मनोहर, श्यामल स्वरूप शोभा से युक्त, श्री–अर्थात् श्रीराधाप्रिया सहित सर्वदा वन्दनीय श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रणाम अर्पित करते हैं।

(७७)

ब्रह्मवेत्ता, वेदज्ञ धीरपुरुषों द्वारा सर्वविध रूप से स्तुति किये गये भगवान् श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण सर्वेश्वर प्रभु को प्रतिपल नमस्कार करते हैं।

(७८)

सर्वाधारं जगद्धेतुं सर्वकारणकारणम् ।
नित्यं क्षराक्षरातीतं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७९)

भीष्माऽर्जुनोद्धवैर्भक्तैः समाराध्यमनारतम् ।
सर्वसिद्धान्तसिद्धान्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८०)

द्वैताद्वैतात्मकं देवं कोटीन्दुसुन्दरं विभुम् ।
जगज्जन्मादिहेतुञ्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८१)

स्वर्णाऽऽलङ्कार-शृङ्गारैश्शोभितं रसशेखरम् ।
शृङ्गारमञ्जुकुञ्जेषु नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८२)

सच्चिन्मये दिव्यधाम्नि श्रीमद्वृन्दावने व्रजे ।
कुञ्जकेलिरतं प्रेष्ठं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(७८)

निखिल जगत् के एकमात्र कारण रूप, सबके परम आधार समस्त कारणों के एकमात्र मूल कारण, जो क्षराक्षरातीत हैं और नित्य है ऐसे श्रीसर्वेश्वर प्रभु को सर्वदा अभिवन्दन है।

(७९)

सम्पूर्ण शास्त्र-निहित ज्ञान-विज्ञान के परम मर्मज्ञ, धर्म के गूढ रहस्यों के परमोपदेष्टा, आबाल ब्रह्मचारी महा पराक्रमी पितामह भीष्म, भगवान् श्रीकृष्ण के प्रिय सखा भक्तशिरोमणि महाबल-शाली वीर अर्जुन, वेद-वेदान्ततत्त्वोपदेष्टा प्रभु के अति निकटतम अतिप्रिय सखा परम ज्ञानी श्रीउद्धव आदि परम भक्तों द्वारा निर-न्तर समाराधित समग्र सिद्धान्तों के एकमात्र परम सिद्धान्त रूप श्रीसर्वेश्वर भगवान् को प्रतिपल अभिवादन करते हैं।

(८०)

जो स्वाभाविक द्वैताद्वैत स्वरूप हैं, कोटि-कोटि चन्द्रमाओं से भी अत्यधिक सुन्दर हैं, सर्वव्यापक हैं, जो जगज्जन्मादि के एकमात्र कारण रूप हैं ऐसे श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नित्यशः अभि-नमन समर्पित करते हैं।

(८१)

सुवर्ण के दिव्यतम अलङ्कार एवं शृङ्गार सामग्री से अत्यन्त सुशोभित परम मनोहर शृङ्गार कुञ्ज में शोभायमान रसशेखर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की वन्दना करते हैं।

(८२)

व्रज की पावन वसुन्धरा पर सच्चिदानन्दमय दिव्यधाम श्रीवृन्दावन में निकुञ्जकेलि में अभिरत अति प्रिय भगवान् श्री-सर्वेश्वर को प्रणाम अर्पित करते हैं।

(८३)

मुक्तामण्डितगाङ्गेय–मुद्रिकाहस्तपङ्कजम् ।
प्रवालमालया रम्यं नौमि सर्वेश्वर प्रभुम् ।।

(८४)

वृन्दावनरसाऽऽस्वाद–तल्लीनराधिकाप्रियम् ।
प्रियाध्यानरतं कृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८५)

कदम्बकुसुमस्तोम–मञ्जुमाल्यविभूषितम् ।
दिव्यसौरभसंयुक्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८६)

सुगन्धसलिलस्नातं स्नानकुञ्जे मुहुर्मुहुः ।
सखीभिरञ्चितं सम्यङ्-नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८७)

निकुञ्ज–कुञ्जकान्तारे दिव्यपादपसंकुले ।
व्रजन्तं राधया सार्द्धं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८८)

सान्द्रकादम्बकुञ्जेषु विक्रीडन्तं प्रियाप्रियम् ।।
श्यामाश्यामं रसाधीशं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८३)

मोतियों की जटित स्वर्ण-मुद्रिका (सोना की अंगूठी) से जिनका श्रीकरकमल अतीव शोभाप्रद है, प्रवाल (मूंगा) की माला से जो परम मनोहर हैं, ऐसे श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रतिपल अभिनमन ।

(८४)

श्रीवृन्दावन के दिव्य रस के आस्वादन में तन्मय, राधाप्रिय भगवान् श्रीकृष्ण जो सतत श्यामा-प्रिया श्रीराधाजू के ध्यान में निमग्न श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रणाम करते हैं ।

(८५)

कदम्ब के पुष्पों की मञ्जुल माला जो अतीव सुन्दर सुगन्ध से प्रपूरित है, उसको धारण किये इतने मनोहर जिनके दिव्य दर्शन हो रहे हैं ऐसे श्रीसर्वेश्वर प्रभु का वन्दन करते हैं ।

(८६)

स्नान कुञ्ज में अतीव सुन्दर सुगन्धित जल से बार-बार स्नान किये हुए और सखीजनों द्वारा विविध रूप से सुन्दर प्रकार समर्चित श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमन करते हैं ।

(८७)

दिव्य तरुवरों की सुन्दर सघनता से परिशोभित, निकुञ्ज-कुञ्ज के गहन-वनप्रदेश में; स्वामिनी नित्यनवकिशोरी सर्वेश्वरी श्रीराधा के साथ वनविहार करते हुए श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रतिपल अभिवन्दन ।

(८८)

सघन कदम्बकुञ्जों में विविध क्रीडा करते हुए रसेश्वर प्रियाप्रिय श्यामाश्याम भगवान् श्रीसर्वेश्वर को प्रणति पुरस्सर अभिनमन ।

(८९)

चामीकररथाऽऽरूढं श्रीमद्वृन्दावनस्थले ।
प्रियया राधया साकं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९०)

किशोरयुगलं देवं सखीजनसमावृतम् ।
कुञ्जप्रासादसंपूज्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९१)

दिव्यदोलोत्सवे राधा–माधवं कञ्जलोचनम् ।
दोलायमानमासीनं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९२)

विविधाऽऽस्वाद्यद्रव्यैश्च भूरिमधुरिमाऽऽयुतैः ।
तृप्तं भोजनकुञ्जेषु नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९३)

होलिकोत्सवकाले चाऽबीरलीलां परस्परम् ।
कुर्वन्तं राधिकाकृष्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९४)

तमालसान्द्रच्छायायां प्रभातेऽर्कसमागते ।
राजमानं निकुञ्जेशं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(८९)

श्रीवृन्दावनधाम की दिव्य स्थली पर स्वर्ण के रथ पर विराजमान, श्रीराधाप्रिया सहित श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रतिदिन प्रतिक्षण अभिवन्दन करते हैं।

(९०)

निकुञ्ज सहचरी परिकर के मध्य श्रीयुगलकिशोर निकुञ्ज-महल में प्रपूजित भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पुनः पुनः अभि-वन्दना करते हैं।

(९१)

दिव्य डोल-महोत्सव के रसमय सुभग अवसर पर हिंडोरा में विराजित झूलते हुए कमललोचन राधामाधव श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अभिवन्दना करते हैं।

(९२)

भोजन कुञ्ज में अतीव मधुर नाना प्रकार के सेवनीय मिष्ठान्न-पदार्थों के सेवन से परितृप्त भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमन करते हैं।

(९३)

होली महोत्सव के समय पर परस्पर में अबीर-गुलाल आदि के आलेपनादि की रसमय लीला विलास करते हुए नित्य निकुञ्जविहारी युगलकिशोर श्यामाश्याम श्रीसर्वेश्वर प्रभु को पुनः पुनः नमस्कार अर्पित है।

(९४)

सूर्योदय होने पर प्रातःकाल के समय तमालवृक्ष की सघन छाया में विराजमान निकुञ्जेश्वर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की वन्दना करते हैं।

(९५)

नानासुगन्धितैर्द्रव्यैः समलङ्कृतमच्युतम् ।
रासरसमहासिन्धुं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९६)

अत्यद्भुतं कृपाधाम श्रीपूर्णपुरुषोत्तमम् ।
सश्रद्धं सादरं देवं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९७)

अखिलेशं महाधीशं श्रीगोपीजनजीवनम् ।
शुद्धं सनातनं मूलं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९८)

सखीपरिकरै रम्यं सद्भिश्चारुनिषेवितम् ।
ब्रह्मण्यं भक्तवृन्देड्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९९)

पूर्णं पूर्णतमं नित्यं पूर्णं ब्रह्म रसोदधिम् ।
वेद-वेदान्तसिद्धान्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(१००)

श्रीराधामोहनं कृष्णं वृन्दावनविहारिणम् ।
नवीननीरदश्यामं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ।।

(९५)

नानाविध सुगन्धित पदार्थों से अलङ्कृत, रासरस के महासागर अच्युत भगवान् श्रीसर्वेश्वर की अभिवन्दना करते हैं।

(९६)

जो अतिशय अद्भुत हैं विलक्षण हैं, कृपा के धाम हैं ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् जो परमदेव है उनको श्रद्धायुक्त आदर सहित कोटिशः प्रणाम अर्पित करते हैं।

(९७)

श्रीगोपीजनों के जो सर्वस्व जीवन हैं, जो अखिलेश्वर परम अधीश्वर हैं शुद्धस्वरूप परम सनातन भववृक्ष के मूल कारणरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अभिवन्दन करते हैं।

(९८)

सखी परिकर से अतिरमणीय, रसिक सन्तों द्वारा परिसेवित है जो परम ब्रह्मण्य हैं, भक्तवृन्दों द्वारा संस्तुत ऐसे श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमन करते हैं।

(९९)

वेद-वेदान्त के परम सिद्धान्त, दिव्यरसमहोदधि जो नित्य पूर्ण पूर्णतम पूर्णपरब्रह्म श्रीसर्वेश्वर प्रभु हैं उनको बारम्बार नमस्कार अर्पित है।

(१००)

नवीन श्याम मेघमाला के समान जिनका सुन्दर श्यामल स्वरूप हैं, ऐसे वृन्दावनविहारी राधामोहन भगवान् कृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु की बारम्बार अभिवन्दना करते हैं।

(१०१)

निरतं नित्यलीलायां मञ्जुले भूमिमण्डले ।
प्रगीतं सर्वशास्त्रेषु नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(१०२)

ईशं ब्रह्माण्डभाण्डानां प्रेरकं जगतः परम् ।
शाश्वतं परमाधारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(१०३)

अनन्यै रसिकै ध्र्येयं तपोधनमहात्मभिः ।
अभीष्टसम्प्रदं सर्वं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(१०४)

प्रत्यक्षं दर्शनं दिव्यं सदाऽभिवाञ्छितप्रदम् ।
सच्चिदानन्दरूपञ्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(१०५)

पूर्वाचार्यैः सदा सेव्यं शालग्रामस्वरूपिणम् ।
देवं परम्पराप्राप्तं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(१०६)

गुञ्जाफलसमं सूक्ष्मं रुचिरं दिव्यविग्रहम् ।
निम्बार्काचार्यपीठस्थं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(१०१)

इस परम मञ्जुलतम भूमिमण्डल पर नित्य-लीला-विलास में अनवरत अभिरत, सम्पूर्ण शास्त्रों में जिनके मङ्गलमय स्वरूप का निर्वचन है, इसी प्रकार समस्त शास्त्रों में जिनके लोकोत्तर माहात्म्य का कमनीय वर्णन है ऐसे भगवान् श्रीसर्वेश्वर को नित्य प्रणाम करते हैं।

(१०२)

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डों के जो जगन्नियन्ता अधिनायक हैं, सम्पूर्ण जगत् के जो मूल प्रेरक हैं, शाश्वत और परमाधार है ऐसे श्रीसर्वेश्वर प्रभु को निरन्तर अभिनमन करते हैं।

(१०३)

तपस्या ही जिनका परमधन है ऐसे पुण्यश्लोक अमलात्मा महात्माओं द्वारा तथा अनन्य रसिक महानुभावों द्वारा जो सर्वदा ध्येय अर्थात् अन्तःकरण में ध्यान किये जाते हैं। इच्छित समस्त फल के प्रदाता भगवान् श्रीसर्वेश्वर को प्रणमन करते हैं।

(१०४)

जिनका दिव्य दर्शन हैं जो प्रत्यक्ष हैं, जो सर्वदा अभिलषित फल को देने वाले हैं, परम चिद्घन अर्थात् आनन्दरूप हैं ऐसे सर्वान्तरात्मा श्रीसर्वेश्वर प्रभु को मुहुर्मुहु अभिवन्दन करते हैं।

(१०५)

पूर्वाचार्यों द्वारा सर्वदा संसेवित अपनी पूर्वाचार्यपरम्परा से सम्प्राप्त दिव्यदेवरूप शालग्रामस्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की वन्दना करते हैं।

(१०६)

गुञ्जाफल (रत्ती-चिरमी) सदृश सूक्ष्मस्वरूप परम सुन्दर दिव्य विग्रहरूप जो अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में सतत विराजमान श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमन करते हैं।

(१०७)

सर्वेश्वरप्रभोश्श्लोक-शतकं भक्तिभावितम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

यह "श्रीसर्वेश्वरशतक" जो भक्तिरस से प्रपूरित है तथा श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य द्वारा विरचित हुग्रा है।

(१०८)

श्रुत्वा शतकपाठञ्च सद्यः सर्वेश्वरप्रभुः ।
ददाति वाञ्छितं सर्वं कृपाधाम-दयानिधिः ।।

इस "श्रीसर्वेश्वरशतक" का पाठ श्रवण कर कृपा के धाम परम दयानिधि श्रीसर्वेश्वर प्रभु तत्काल अभिवांछित समस्त फलों को प्रदान करते हैं।

भज सर्वेश्वर नाम

(१)

जे जन सर्वेश्वर भजै, श्रद्धा सात्विक चित्त ।
'राधासर्वेश्वरशरण' पावत उत्तम वित्त ।।

(२)

सर्वेश्वर राधा सहित, जे जन उचरत नाम ।
'राधासर्वेश्वरशरण' पावत श्रीव्रजधाम ।।

(३)

रे मन ! अति चञ्चल-चपल, तज अपने सब काम ।
'राधासर्वेश्वरशरण' भज सर्वेश्वर नाम ।।

(४)

भव माया दुस्तर महा, भज सर्वेश्वर देव ।
'राधासर्वेश्वरशरण' कर प्रतिपल प्रभु सेव ।।

(५)

सर्वेश्वर की शरण हो, दैन्य भाव संचार ।
'राधासर्वेश्वरशरण' नहि बाधक संसार ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

द्वारा विरचित ग्रन्थ-माला

	ग्रन्थ			श्लोक संख्या
१.	श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत "प्रातः स्तवराज" पर 'युग्मतत्त्वप्रकाशिका' नामक संस्कृत व्याख्या			
२.	श्रीयुगलगीतिशतकम्	[संस्कृत-पद्यात्मक]	प्रकाशित	११८
३.	उपदेश-दर्शन			
४.	श्रीसर्वेश्वर सुधा-बिन्दु-[पद सं० ११८]		,,	
५.	श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः	[संस्कृत-पद्यात्मक]	,,	३८२
६.	श्रीराधामाधवशतकम्	,,	,,	१०५
७.	श्रीनिकुञ्ज सौरभम्	,,	,,	५८
८.	हिन्दु संघटन	[हिन्दी-गद्यात्मक]	,,	
९.	भारत-भारती-वैभवम्	[संस्कृत-पद्यात्मक]	,,	१३५
१०.	श्रीयुगलस्तवविंशतिः	,,	,,	१८६
११.	श्रीजानकीवल्लभस्तवः	,,	,,	३४
१२.	श्रीहनुमन्महाष्टकम्	,,	,,	९
१३.	श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्	,,	,,	१४
१४.	भारत कल्पतरु [पद सं० १४६]		,,	
१५.	श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्	,,	,,	६५
१६.	विवेक-वल्ली [दोहा सं० ४०६]		,,	
१७.	नवनीतसुधा	[संस्कृत-गद्यात्मक]	,,	
१८.	श्रीसर्वेश्वरशतकम्	[संस्कृत-पद्यात्मक]	,,	१०८
१९.	श्रीनिम्बार्कचरितम्	[संस्कृत-गद्यात्मक]	अप्रकाशित	

कुल श्लोक संख्या १२१४

मुद्रक— श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)